

प्राकृतिक आपदा से अनजान विकास

गीता शर्मा

आज का मानव आधुनिकता और उन्नति की अंधी दौड़ में इतनी तेज़ी से भाग रहा है कि वह प्रकृति के नियमों और उसके संतुलन को पूरी तरह भूल चुका है। हम जिस विकास का जश्न मना रहे हैं, यदि वह प्राकृतिक आपदाओं के जोखिम को नज़रअंदाज़ करके किया जा रहा है, तो वह वास्तव में प्रगति नहीं बल्कि विनाश का निमंत्रण है।

नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को रोककर बांध बनाना, पहाड़ों को काटकर बहुमंजिला इमारतें और सड़कें खड़ा करना, जंगलों की अंधाधुंध कटाई और सीवेज व ड्रेनेज सिस्टम की परवाह किए बिना शहरों का विस्तार—ये सब ऐसे विकास के उदाहरण हैं जो प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने के बजाय उससे खिलवाड़ करते हैं। इसका नतीजा हम आए दिन तबाही के रूप में देखते हैं। उत्तराखंड में जोशीमठ का धंसना, केदारनाथ की जलप्रलय, वायनाड में भूस्खलन और मैदानी इलाकों में अनियंत्रित शहरी बाढ़ इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

जब हम प्राकृतिक आपदाओं की अनदेखी करके इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करते हैं, तो हम अल्पकालिक लाभ के लिए दीर्घकालिक सुरक्षा का सौदा करते हैं। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में, जब बेमौसम बारिश, बादल फटने और भीषण सूखे जैसी घटनाएं आम हो चुकी हैं, 'आपदा-अज्ञान' विकास अत्यधिक घातक साबित हो रहा है। ऐसी परियोजनाओं पर खर्च हुआ अरबों रुपया और मेहनत एक ही झटके में बह जाती है, और सबसे भारी कीमत गरीब व असहाय आबादी को अपनी जान-माल से चुकानी पड़ती है।

सच्चा विकास वह है जो सतत और आपदा-रोधी हो। हमें यह स्वीकार करना होगा कि विकास और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। किसी भी बड़ी निर्माण परियोजना को शुरू करने से पहले कड़े पर्यावरणीय प्रभाव आकलन और आपदा जोखिम विश्लेषण को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। पहाड़ों, तटीय क्षेत्रों और भूकंपीय क्षेत्रों जैसे संवेदनशील इलाकों में प्रकृति की सीमाओं को ध्यान में रखकर ही निर्माण कार्य की अनुमति मिलनी चाहिए।

प्राकृतिक आपदाओं से मुंह मोड़कर किया गया विकास केवल एक ताश का घर है, जो प्रकृति का एक ही झटका सहन नहीं कर सकता। यदि हम अपनी भावी पीढ़ियों को एक सुरक्षित भविष्य देना चाहते हैं, तो हमें 'प्रकृति के खिलाफ विकास' की जगह 'प्रकृति के साथ विकास' का मॉडल अपनाना होगा।